"मानवीय - आवाहन"

"श्रद्धेय मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी"

का एक सार्वजनिक व्याख्यान

"पयामे इन्सानियत फोरम"

अरबी विश्वविद्यालय, नदवा, लखनऊ

पोस्ट बाक्स न० १३, नदवा लखनऊ–७

दूर-भाष २२६४८

www.abulhasanalinadwi.org

सर्वाधिकार सुरक्षित :
पयामे इन्सानियत फोरम
नदवा, अरबी विश्वविद्यालय,
लखनऊ ।

मार्च १९८०

मूल्य : रु० 1.00

जे० के० आफसेट प्रिन्टर्स जामा मस्जिद दिल्ली-६ में मुद्रित

www.abulhasanalinadwi.org

मौलाना सैय्यद अबुलहसन अली हसनी नदवी

संक्षिप्त परिचय

मौलाना अबुलहसन अली हसनी नदवी भारत के प्रमुख विद्या-केन्द्र अरबी विश्वविद्यालय नदवा लखनऊ के कुलपति हैं। विद्या और दर्शन में आपका एक विशिष्टि स्थान है। उर्दू और अरबी में आपकी एक विशेष लेखन तथा भाषणशैली है, जो मनोआकर्षक भी है और प्रभावोत्पादक भी। अरबी भाषा के बोलने और लिखने पर आपको उतना ही सामर्थ्य प्राप्त है जितना अरब देशों के विद्वनों को, जिनकी मातृ-भाषा अरबी है। विभिन्न देशों में आप जाते हैं तो वहां के रेडियो आपके भाषण प्रसारित करते हैं और पत्र-पत्रिकाओं में आपके भाषण एवं लेख प्रकाशित होते हैं। 1956 ई० में दमिश्क विश्वविद्यालय ने महानमनीषी अबुल हसन अली मियाँ कों विजिटिंग प्रोफेसर (Visiting Professor) के रूप में अपने यहाँ निमंत्रित किया, उन्होंने विश्वविद्यालय में दस लेक्चर दिये जिनका संग्रह अरबी भाषा में प्रकाशित हो गया है। 1957 में दमिश्क की प्रसिद्ध अकादमी ने मौलाना अबुल हसन अली मियाँ को अपना मेम्बर और फेलो बनाया। उनकी पहली अरबी पुस्तक के तेरह संस्करण मिश्र में प्रकाशित हो चुके हैं। इस पुस्तक का संसार के कई भाषाओं में अनुवाद भी छप चुका है।

मौलाना एकसौ पचास से अधिक पुस्तकों के लेखक हैं जिनमें से अधिक पुस्तकों का अंग्रेजी हिन्दी अनुवाद भी हो चुका है।

मौलाना ने योरोप और पश्चिमी देशों का कई बार दौरा किया है और वहाँ के विश्वविद्यालयों में उनके भाषणों से लोग प्रभावित हुए हैं।

मौलाना के विचार अतिस्वच्छ, शुद्ध तथा उच्चकोटि के होते हैं।

www.abulhasanalinadwi.org

मौलाना अबुलहसन अली साहब को इस हर्ष के साथ कि देश स्वतन्त्र हो गया। इस बात के लिए महान् दुःख है कि इस क्रान्ति के साथ देशवासियों के हृदयों का परिवर्तन हुआ और आचरण और नैतिकता की दृष्टि से देश ऊपर उठने के स्थान पर पतन ग्रस्त ही होता चला जा रहा है। मौलाना महोदय का यह भाषण देशवासियों को नैतिकता और आचरण सम्बन्धी क्रान्ति का सन्देश है।

www.abulhasanalinadwi.org

मानवीय आवाहन

अखिल भारतीय मानवीय आवाहन मंडल के तत्वावधान् में २२ मई सन् १९७५ ई० को लखनऊ के प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान गंगा प्रसाद मेमोरियल हाल अमीनुद्दौला पार्क में सर्व प्रिय मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (कुल पति, अरबी विश्व-विद्यालय नदवतुल उलमा) ने सम्बोधित किया था।

इस सम्मेलन में मुस्लिम और गैर मुस्लिम भाई एवं शिक्षित वर्ग ने सहस्रों की संख्या में सम्मलित रूप से भाग लेकर मौलाना के व्याख्यान को एकाग्रचित्त होकर ध्यानपूर्वक सुना। यह व्याख्यान लगभग ढाई घण्टे तक चलता रहा। और इसे दानियाल अहमद भटकली (विद्यार्थी नदवा-विश्व-विद्यालय) ने टेप-रिकार्ड यन्त्र की सहायता से लेखनी-वद्ध किया एवं विषयों शीर्षकों एवं प्रकरणों का विभाजन मान्यवर उपदेशक की दृष्टि पात के पश्चात ही प्रस्तुत पुस्तक आपके करकमलों में शोभायमान है।

इसहाक जलीस "नदवी"

www.abulhasanalinadwi.org

मानवीय आवाहन

'इस घर को आग लग गई घर के चिराग से'

प्रिय बन्धुओं—इस शुभ बेला में मुझे जो कुछ कहना है इसके लिये केवल एक पंक्ति पर्याप्त है। यह पंक्ति लखनऊ सभ्यता एवं इसी भाषा की है। लखनऊ के एक कवि सम्मेलन (मुशायरा) में जो नवाबी काल में हुआ था, जिसमें विभिन्न स्थानों के सुयोग्य अध्यापकगण भी उपस्थित थे, एक अल्प आयु शायर ने अपनी गज़ल की प्रस्तुत पंक्तियाँ पढ़ीं तो मुशायरे में धूम मच गई—

दिल के फफोले जल उठे सीने के दाग से।
इस घर को आग लग गई घर के चिराग से।

इस पद्य की दूसरी पंक्ति बहुत प्रसिद्ध है और यह विशेष अवसरों पर पढ़ी जाती है। इसको विशेष रूप से ऐसे अवसर पर पढ़ते हैं जब किसी कुल-परिवार का कोई बच्चा बड़ा होनहार हो और उसमें वीरता एवं सद्गुण के लक्षण प्रतीत होते हों और परिवार की अनेकों आशायें इसमें निहित हों, यदि इससे कोई दोषपूर्ण कार्य हो जाए और वह अपने परिवार की ख्याति एवं मर्यादा को नष्ट करने लगे अथवा अपने परि-

www.abulhasanalinadwi.org

वार के लिए किसी बड़े कष्ट का कारण बनता है तो निर्विवाद एवं अनियंत्रित रूप से लोग कहने लगते हैं—

'इस घर को आग लग गई घर के चिराग से'

आप स्वयं देखें कि आज सम्पूर्ण विश्व का यही चित्र है। मानवता के परिवार को पूर्व से लेकर पश्चिम तक उत्तर से दक्षिण तक इस घर के ही चिराग से आग लगी है। कदापि यह अग्नि-ज्वाला बाहर से नहीं आई मानवीय इतिहास के काल में यह नहीं हुआ कि पशुओं, हिंसक-पशुओं, साँपों या विच्छुओं ने मानवता पर कोई आक्रमण किया हो।

सम्पूर्ण इतिहास में एक उदाहरण भी दुर्लभ है कि किसी राज्य का पतन इस भाँति हुआ हो और राष्ट्र की ईंटें इस तरह बजी हों कि नगर के चीतों भेड़ियों या शेरों ने उस पर आक्रमण किया हो, मनुष्यों का भक्षण किया हो और उस राज्य की संस्कृति एवं सभ्यता का दीपक भी बुझाया हो।

साँप और विच्छू तो नगर में पाए जाते है, परन्तु इतिहास में इसका एक भी उदाहरण नहीं मिलता कि इनके कारण कोई एक परिवार भी समूल नष्ट हो गया हो अथवा अमुक विच्छुओं के कारण उस घर का प्रत्येक व्यक्ति नष्ट हो गया हो या मोहल्ले का मोहल्ला साफ हो गया हो। मानवी-इतिहास के पतन की जो भी रूप-रेखा मिलती है किसी देश, धर्म, सोसाइटी और समाज के विनाश की जो घटनाएं घटीं वह सब मनुष्यों के ही क्रिया-कलाप हैं।

यदि आप मुझे क्षमा करें तो मैं आपको बताऊँ कि मान-

www.abulhasanalinadwi.org

वीय इतिहास में जो भी दुःखद घटनाएं घटीं और मानतव पर जो महान् कष्ट के बादल मँडराए वह सभी मनुष्यों द्वारा ही लाये गए थे जो अधिक शिक्षित थे जो सुसंस्कृत और सज्जन थे, यदि यह कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी कि जिनका अत्यधिक मानसिक विकास और शिक्षा क्षेत्र में अधिक प्रसार रहा है। किसी देश को भी अशिक्षित एवं असभ्य मनुष्यों ने पतन की गर्त में नहीं डाला। इतिहास में इस घटना का एक भी उदाहरण दुर्लभ है कि किसी देश के असभ्यों या अशिक्षितों द्वारा उस देश का पतन हुआ हो, इन अनपढ़ों में जिन्हें राजनीति का तनिक भी ज्ञान नहीं वह भोले-भाले तो केवल मोटी-मोटी बातें जानते हैं उन्हें तो केवल भोजन एवं जल की व्यवस्था होनी चाहिये। वह पतन के लक्षण कहां से ला सकत हैं। धर्मों एवं सोसाइटियों का पतन कोई प्रहसन या नाटक नहीं है, यह कोई अभिनय नहीं है। यह कोई व्यक्तिगत या एक समुदाय के पाप का फल नहीं है। इसी प्रकार संस्कृति के मूल तत्व भी नष्ट हो जाते हैं जैसे कोई चीज सड़ जाए और उसमें दुर्गन्ध उत्पन्न हो जाए इस तरह से यह विनाशता के दिन देखने पड़ रहे हैं।

दासता एवं पराधीनता के कारण

इतिहास साक्षी है और इसके उदाहरण बहुत ही कम मिलते हैं कि किसी जाति पर दूसरी जाति ने सैकड़ों या हज़ारों वर्ष शासन किया हो। यह तो अप्राकृतिक वस्तु है कि कोई सम्प्रदाय बाहर से आकर दूसरी जाति को दास बनाए और

www.abulhasanalinadwi.org

शताब्दियों तक दास रखे। बहुत सी जातियों के पतन के कारण या किसी महाराजा या अधिकारी के दोष के कारण ऐसी स्थितियां पैदा हो जाती हैं। भारतीय-इतिहास का ही अवलोकन किया जाय तो ज्ञात होता है कि जब प्रबन्ध में अव्यवस्था हुई तो लोगों की मान मर्यादा सङ्कट में पड़ी तथा उनका जीवन उन्हीं के लिये कष्ट दायक हो गया, न शान्ति रही, न धैर्य। उस समय समूचे देश की जनता चीत्कार कर रही थी कि कोई अन्य शक्ति प्रबन्धक स्वरूप आए और इस घोर अत्याचार से मुक्ति दिलाए।

संदेश दो तरह के होते हैं। एक वह जो सरकारी होता है कानूनी और लिखित रूप में होता है। दूसरा संदेश वह होता है जो हृदय, मन एवं आत्मा से प्रकट होता है। आत्मा कहती भी है, सुनती भी है। किसी जाति की वह आत्मा जिसे पीड़ा पहुंचाई जाती है चीत्कार करती है, बच्चों का विलाप एवं क्रन्दन, स्त्रियों का रूदन एवं चीख-पुकार, व्यथित आत्माओं की आहें, उनके हृदय की यह वेदना सैकड़ों एवं हज़ारों पर्दों को विदीर्ण करती हुई उस सर्व शक्तिमान ईश्वर के समीप पहुंचती है। यदि उसके मार्ग में समुद्र भी अवरोध रूप में आए, पर्वत भी आए तो भी उसे यह लांघती हुई ईश्वर के समीप पहुंचती है। जैसे कि अल्लाह के अंतिम महर्षि मुहम्मद साहब ने यह संदेश दिया है कि "उत्पीड़ित की आह से बचो" इसलिये कि वह बिना किसी अवरोध के ईश्वर के पास पहुंचती है। उसके मार्ग में कोई अवरोध नहीं उत्पन्न कर सकता। उस महान् ईश्वर को अपनी सृष्टि पर दया आती है, हमें आप को दया

www.abulhasanalinadwi.org

आए या न आए। उस ईश्वर को अपनी सृष्टि से अतिशय स्नेह है, प्रत्येक निर्माणकारी को स्वनिर्मित वस्तु से स्नेह होता है। एक कुम्हार को अपनी मिट्टी की बनाई हुई चीज़ से आप जानते हैं कि कितना प्यार होता है और उस महान् ईश्वर द्वारा बनाई हुई किसी वस्तु को कोई कष्ट पहुंचाएगा तो वह ईश्वर कितना दुःखी होगा। मानवता कुचली जाएगी, जब उसकी मर्यादा धूल धूसरित होगी, जब उसके अधिकारों की अवहेलना की जाएगी जब वास्तविकता से मुख मोड़ा जाएगा, जब दिन को रात और रात को दिन कहा जाएगा जब सूर्योदय को सूर्यास्त और सूर्यास्त को सूर्योदय कहा जाएगा, जब बच्चों के हाथों से भोजन छीना जाएगा, जब विधवाओं के सर से दुपट्टा उतारा जाएगा, जब गरीबों के चूल्हे से तवा खींचा जाएगा, तब देश की दरो-दीवार से यह पुकार उठती है कि हमारी सहयता करो हम असहाय हैं--हम असहाय हैं हमारी सहायता करो, ऐसे अवसर पर वह ईश्वर प्रतीक्षा नहीं करता कि इन गरीबों, उत्पीड़ित मनुष्यों को मुक्ति देने वाला कहीं से आए! यही हमारा मानवीय इतिहास का अनुभव है। जब लोग जीवित मुद्रा में भी अजीवित रहते हैं, जिनका एक घण्टा भी जीवित रहना कठिन हो जाता है उस समय पूरे देश का पत्ता-पत्ता, तृण-तृण, कङ्कर-पत्थर, दरो-दीवार प्रतिध्वनि (Echo) करते हैं कि हमें वचाओ, हमें बचाओ। यह जीवन पाप बन गया है हम उन अपनों को लेकर क्या करें, हमारे किस काम के ? जो शांति नहीं स्थिर रख सकते, उस समय वह अन्तर्यामी ईश्वर उनके पापों का उन्हें फल देता है तथा

www.abulhasanalinadwi.org

असहायों की सहायता करता है। इतिहास साक्षी है, जब कभी ऐसी घटनाएं घटीं, घोर अत्याचार किये गए तो बाहर ही से कोई न कोई जन-नायक आया और आततायियों को नष्ट करके देश का शासन अपने अधिकार में लिया, देश-वासियों के लिये लाभ प्रद हुआ और स्वयं लाभान्वित हुआ ऐसे अवसर पर आप मुझे कुछ भी कहें परन्तु मुझे इस पर तनिक भी आश्चर्य नहीं क्योंकि ईश्वर को प्रत्येक स्थिति में अपनी सृष्टि के साथ न्यायदान (दादरसी) करना है, ऐसी स्थिति अधिक दिन तक नहीं रहती। यही अन्तरराष्ट्रीय धारणा भी है कि देश के अधिकारियों और सत्तारूढ़ सरकार की ना समझी एवं उसके पापों के परिणाम का भाजन निर्दोष जनता बनती है।

विदेशी एवं स्वदेशी सरकारों में अन्तर :—

सब को विदित है कि अंग्रेज जिन्होंने हमारे देश पर सौ वर्षों से अधिक शासन किया उन्होंने हमारे देश से कोई हार्दिक सम्बन्ध नहीं रखा, उन्होंने हमारे देश को केवल एक दूध देने वाली गाय समझा, वह तो अपने और अपनी कौम के लाभ के लिये आए थे। यदि वे यहां से रेल की पटरियां, घर के दरवाजे और खिड़कियां उखाड़ कर ले जाते तो हमें तनिक भी आश्चर्य न होता क्योंकि उनको हमारे देश में रहना ही नहीं था। वह इस देश में निवास करते हुए भी अपने देश की प्रगति एवं विकास में चिन्ता मग्न थे। लेकिन आश्चर्य का विषय तो केवल यह है कि—

'इस घर को आग लग गई घर के चिराग से'

www.abulhasanalinadwi.org

अंग्रेज इस घरके चिराग़ नहीं थे अपितु वह इस घर की आग थे। यदि वह अग्नि-ज्वाला भड़काते तो आश्चर्य नहीं था आग तो इस घर के चिराग ने ही लगाई। अंग्रेज तो यहां अनिमंत्रित–अतिथि (Scavangers) बन कर आए ही थे और अतिथि की भांति निवास किये और अतिथि स्वरूप चले गये। उनके तो दिन गिने हुए थे। अँग्रेजों के जाने के पश्चात् अपनों ने इस देश के साथ जो बर्ताव किया वही आश्चर्यजनक है।

आप मुझे क्षमा करें मैं आप ही में से एक व्यक्ति हूं यदि मैं आपकी शिकायत करता हूँ तो अपनी ही शिकायत है। यदि मैं आपकी आलोचना करूं तो अपनी ही अलोचना है। जिस लक्ष्य को लेकर हमने आपको बुलाया है और हम सब एकत्र हुए हैं वह यह है कि हम सब इस देश की वर्तमान स्थिति का निरीक्षण करें और एकमत होकर स्वीकार करें कि—

'इस घर को आग लग गई घर के चिराग से'

जिन व्यक्तियों ने इस देश का उत्तरदायित्व लिया वह इसी देश के वास्तविक नागरिक थे। जिनका भाग्य इसी देश पर आधारित था जिनको इसी देश में जीवन और मरण प्राप्त करना था, जिन्होंने स्वतन्त्रता-संग्राम की बलिवेदी को आनन्द-पूर्वक ग्रहण किया। यही अमीनाबाद पार्क जो आपसे तनिक दूरी पर है और मैं यह भी अनुभव करता हूं कि यह आवाज वहाँ पहुंच रही है। यह पार्क अभी तक गांधी जी, पंडित मोती लाल नेहरू, पंडित जवाहर लाल नेहरू, मौलाना मुहम्मद अली,

www.abulhasanalinadwi.org

मौलाना अबुलकलाम आजाद के व्याख्यानों से गूञ्ज रहा है।

यही गंगा प्रसाद मेमोरियल हाल जिसमें आप इस समय एकत्र हुए हैं, इसके निरीक्षण एवं आलोचना के लिये उचित स्थान है यह स्वतन्त्रता-संग्राम के पथप्रदर्शकों का विशेष सदन एवं मञ्च रहा है। मैंने भी उनके भाषणों को सुना है, ऐसा प्रतीत हो रहा है, मैं अपनी आँखों से देख रहा हूं कि मौलाना-आजाद, मौलाना शौकत अली इस स्थान पर खड़े होकर भाषण दे रहे हैं। लगता है यह सब कल की बात है (आश्चर्य मुद्रा में)।

यह अमीनाबाद पार्क तो स्वतन्त्रता-संग्राम के महान सभा-मञ्च में एक था। लखनऊ को इस पर गर्व है कि स्वतन्त्रता संग्राम में इसका वह भाग रहा है जो भारत के बहुत कम नगरों को प्राप्त हुआ। मुझे अच्छी तरह से याद है कि साइमन-कमीशन भारत में आया हुआ है। देश के नेताओं की तरफ से इसके वाई-काट की अपील की गई है तथा इसी परम्परा में अमीनाबाद पार्क में एक महान समारोह हुआ जिसमें मौलाना मुहम्मद अली और पंडित जवाहर लाल नेहरू के व्याख्यान हुए मैं इस समारोह में सम्मिलित था। लखनऊ में स्वतन्त्रता संग्राम की प्रलय-ज्वाला फूंकी गई, इसी पार्क में विदेशी वस्त्रों को अग्नि भेंट किया गया। यह मेरी आँखों के सामने के दृश्य थे। केवल लखनऊ में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारत में इसकी ज्वाला दहक रही थी। यदि एक भी व्यक्ति देखता तो यही कहता कि "यह ऐसे योग्य, पुनीत एवं होनहार

www.abulhasanalinadwi.org

व्यक्ति हैं जो इस देश की नौका के वाहक होंगे यह वह मानव हैं जो सम्पूर्ण-भारत को पुष्प-पात्र एवं पुष्प-गुच्छ के रूप में परिणित कर देंगे, यह वो व्यक्ति हैं जो इस देश के विभिन्न दुःखों का निवारण करेंगे। यह वो व्यक्ति हैं जो केवल भारतीयों का ही नहीं वरन् सम्पूर्ण मानवीय शीर्ष को उन्नत करेंगे। यह वह व्यक्ति है जिनके समय में विभिन्न प्रकार के कष्टों का निवारण होगा, अशांति नाम मात्र को न होगी अनिर्णयता कोई वस्तु न होगी, न्यायालय केवल न्याय के पुजारी होंगे, उत्तरदायी विभाग धरोहरता के आदर्श बनेंगे। पुलिस की आवश्यकता नहीं होगी। हिन्दू एवं मुसलमान एक दूसरे से भ्रातृ-भाव से गले मिल रहे होंगे।

एकता एवं स्नेह सर्व समर्पण के यह दृश्य आप में से बहुतों ने देखे होंगे किसी को तनिक संदेह नहीं था कि अंग्रेजों के जाने के पश्चात् देश की यह दुर्दशा होगी जिसका निरीक्षण हम आप कर रहे हैं। यह देश तो स्वयं स्वजनों के हाथों नष्ट हो रहा है अस्तु यही मैंने कहा कि—

'इस घर को आग लग गई घर के चिराग से'

आज हमारे देश में ही नहीं वरन् विश्व के कोने-कोने में मानवता पद्‌लित हो रही है, यह तो एक अनन्त कहानी है और सामांन्य शीर्षक भी इस अमुक विषय पर मैं कहां तक प्रकाश डालूं इसके तो अनेकों अवस्थान (Stage) हो सकते हैं, तथा महान् ग्रन्थों की रचना की जा सकती है।

www.abulhasanalinadwi.org

आपकी कहानी–आप ही श्रोता :—

मुझे आज आप से आप ही की कहानी कहनी है। हमें और आप को अपना निरीक्षण करना है। स्वंय हम आप को एक दूसरे के वादी एवं प्रतिवादी के रूप में अपने न्यायालय में न्यायार्थना (Appeal) करनी है। आज वर्तमान देश का चित्र जिसे हम आप देख रहे हैं क्या स्वतन्त्रता संग्राम से पहले इसकी यही आशा थी। मैं समझता हूं कि यदि उन स्वतंत्रता सेनानियों के मस्तिष्क में तनिक् भी इसका संदेह होता तो जिस उत्साह से स्वतंत्रता संग्राम की बलिवेदी का चुम्बन कर रहे थे, अवश्य ही वह अधीर हो उठते।

इस देश की दुर्दशा जो हमने कर रखी है और साथ ही साथ जिस ढंग से हमने इसके रूप एवं मुखाकृति को नष्ट किया है, ऐसा प्रतीत होता है मानो यह देश किसी शत्रु के अधीन हो गया हो और वैरी बन कर हमसे शत्रुता का प्रतिशोध कर रहा हो। अपने हृदयङ्गम स्वतन्त्रता रूपी ज्वर एवं वेदना को निस्कासित कर रहा हो।

ऐसा प्रतीत होता है कि हम उसको जड़ समूल नष्ट करना चाहते हैं और इसको किसी योग्य रहने देना नहीं चाहते इस देश के साथ हम शत्रुता एवं प्रतिकार का वर्ताव कर रहे हैं यदि आप चाहें तो रेलों बसों इत्यादि पर यात्रा करके अध्ययन कर सकते हैं, किसी भी विभाग में जाकर देख कर निर्णय कीजिए कि इसके साथ क्या हो रहा है। हम स्वयं अपने हाथों इस देश को नष्ट कर रहे हैं। रेलों की दशा यह

www.abulhasanalinadwi.org

है कि पङ्खे, टोटियां, विद्युत-वल्ब, खिड़कियां, सीटों की रेक्सीन, तक चुराए जाते हैं। कहां तक कहूं, गलियों में मेन होल के ढक्कन चुरा लिये जाते हैं, इसका तनिक भी ध्यान नहीं होता कि इसमें निर्दोष शिशुओं की जान जा सकती है।

अति अधमता एवं निम्नता :—

ऐसी मानवीय अधमता और निम्नता के लिये मेरे समक्ष शब्द ही नहीं। ऐसी छोटी-छोटी बातें इतने बड़े जन समूह के सम्मुख कहने में मुझे हार्दिक दुःख का अनुभव हो रहा है, मैं समझता हूं मैं अपने स्थान से निम्नस्तर की ओर जा रहा हूं, परन्तु वस्तु निरीक्षण में जिनके बिना वर्तमान स्थिति का वास्तविक चित्र प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है, फिर यह देखिये कि क्या एक नागरिक दूसरे नागरिक को अपना भाई समझता है? और क्या यह भी समझता है कि यह भी उसी ब्रह्मा की सृष्टि है? कदापि नहीं प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे को इस दृष्टि से देखता है कि यह उसका आखेट (शिकार) है। आज हमारे समाज एवं प्रबन्धक समिति में सुयोग्य व्यक्ति के प्रति हिंसक पशु की भांति वर्ताव किया जाता है। आज यह दशा हो गई है कि हम अपने ही जैसे मनुष्य को अपने ही देश के नागरिक को अपना भाई नहीं समझते। हमारी दृष्टि उसकी जेब पर रहती है। हमारी दृष्टि तो उसकी हृदय-गति पर, हमारी दृष्टि उसकी तड़पती हुई आत्मा पर, हमारी दृष्टि उसके विलाप करते हुए शिशुओं पर हमारी दृष्टि उसकीवयो-वृद्ध जननी पर होती है। उसके निर्धन पारिवार पर नहीं होती

www.abulhasanalinadwi.org

हमारी दृष्टि तो उसके जेब के चार पैसों पर रहती है। पूरे देश की यह दशा है कि किसी को किसी से सहानुभूति नाम मात्र हो नहीं, समूचा देश एक मण्डी और जुआ-स्थान बन गया है। जिसमें मनुष्यों के चरित्र एवं मान-मर्यादा का क्रय-विक्रय हो रहा है। एक की विजय और सहस्रों की हार हो रही है। किसी के हृदय में उत्साह उच्च विचार, मानवता का सम्मान ईश्वर की सर्व-व्यापकता का ध्यान नहीं। ऐसा विदित होता है कि हमारे हृदय एवं मस्तिष्क का पक्षाघात (Paralysis) हो गया है, हमारी आत्मा मर चुकी है। हमारी आत्मा में हमें प्रेरणा देने की शक्ति नहीं रही, हमारी आत्मा का अवमूल्यन हो चुका है। हमारी आत्मा में एक लोभ उत्पन्न है वह है पैसों का मोह। ऐसी वर्तमान स्थिति और इसकी दुर्दशा से कोई पञ्जा प्रतियोगिता के लिये तैयार नहीं सम्पूर्ण समाज और देश सुधार से मायूस दृष्टि गोचर होता है। यह वह भीषण लक्षण है कि जिससे देश व समाज कभी पनप नहीं सकते। सामूहिक बिगाड़ ने पूरे देश को खोखला कर दिया। प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही आवश्यकताओं, इच्छाओ और सीमित लाभ को पूरे देश पर वरीयता दे रहा है।

मानवता को इस पर शोक प्रकट करना चाहिये, मानवता के प्रवर्त्तकों को लज्जा पूर्वक नतमस्तक होना चाहिये। भयङ्कर दुर्घटनाओं पर पत्थर भी पिघल जाते हैं किंतु हमारे समाज के पाषाण रूपी हृदय ने ऐसे अनेकों आदर्श प्रस्तुत किये हैं जिनका उदाहरण संसार के किसी देश में नहीं मिल सकता।

www.abulhasanalinadwi.org

सामूहिक विनाश से व्यक्तिगत निर्माण :—

सामूहिक विनाश एवं निजनिर्माण की जो भावना इस देश में पैदा हुई है और इसने जो संकट उत्पन्न किये हैं वह बाह्यशक्तियों से भी नहीं पैदा हो सकते। रेल, वायुयान की दुर्घटनाएं तो एकाकी एवं दुर्लभ हैं परन्तु प्रत्येक कार्यालय प्रत्येक बाजार एवं जीवन के विभिन्न पहलुओं में ऐसी लूट खसोट और मानवता व सद्व्यवहार को पद-दलित करने की परम्परा निरन्तर चल रही है जो मानवता के लिये नग्न लज्जा का विषय है। पूरे देश में अकर्मण्यता भ्रष्टाचार एवं पारिवारिक हित की भावना उत्पन्न हो गई है। यह वही देश है जो अंग्रेजों के काल में था मगर न जाने इसके प्रवर्त्तकों को क्या हो गया है। न प्रबन्ध है न शांति है, किसी व्यक्ति को प्रसन्नता का अनुभव नहीं कि वह अपने घर में है। मनुष्य महानतम् सम्मान एवं प्रचुर सम्पत्ति छोड़ कर अपनी मातृ भूमि आते हैं, मातृ-भूमि के प्रति अतिशय स्नेह है, अपना घर अपना देश तात्पर्य यह कि लोगों को वहां शान्ति सम्मान और प्रसन्नता प्राप्त हो एक दूसरे पर विश्वास हो प्रत्येक एक दूसरे के दुखदर्द में काम आएं इसी की दूसरी संज्ञा मातृ भूमि एवं स्वदेश है, ऐसे देश में कौन से ऐसे स्वर्ण-पत्रों का समञ्जन है जिसमें न विश्राम मिले न शान्ति मिले न सुख प्राप्त हो। अपने घर और अपने वतन का अर्थ तो यह है कि मनुष्य को वहां अधिक से अधिक आराम, प्रसन्नता, शांति, सुरक्षा प्राप्त हो। यदि यह अपनी मातृ-भूमि से न

www.abulhasanalinadwi.org

प्राप्त हो सका तो व्यर्थ में उस देश की धरती से कौन प्रेम करेगा।

नत्वर्तक स्वदेश प्रेम :—

सन् 1947 ई० में अंग्रेजों के स्वदेश गमन के पश्चात् हममें मित्रता सहानुभूति, सौहार्दयता स्नेह, का ऐसा आदर्श युग आना चाहिये था कि सुदूर स्थान से भी लोग इस आदर्श का दर्शन करने आते, यह बिगाड़ जो हमारे आपके सामने है यह अपने हाथों की ही कला है। मैं डंके की चोट पर (बल पूर्वक) कहूँगा कि हम सबने अपने को इस देश का वास्तविक प्रवन्धक नहीं सिद्ध किया, हमारी स्वदेश प्रेम की भावना नकारात्मक थी स्वीकारात्मक न थी। हमारी वास्तविक अभिरूचि और योग्यता केवल अंग्रेजों को निकालने पर ही केन्द्रित थी। देश को बनाने और संवारने के लिये हमारे अन्दर अधिक अभिरूचि न थी, और न हमने योग्यता का आदर्श ही प्रस्तुत किया। लड़ाई तो बहुत से लोग जीत लेते हैं, बहुत सी जातियां ऐसी है जो अनुकूल स्थिति में अपनी योग्यता का प्रमाण नहीं दे सकतीं जो प्रतिकूल स्थिति में उन्होंने दिया है। युद्ध-काल में मनुष्य की प्रतिद्वन्दिता की शक्ति उसकी अनेक दुर्बलताओं पर पर्दा डाल देती हैं। हम भारतीयों में कमजोरियां थी स्वतंत्रता संग्राम ने इस पर पर्दा डाल दिया था। जब वह पर्दे का काल समाप्त हुआ और हमारी परीक्षा का समय आया तो हम अनुत्तीर्ण हुए। जब तक दौलत नहीं होती या निर्धनता में बहुत से लोग भक्त एवं पुजारी बन जाते है, दुःख में सुमिरन

www.abulhasanalinadwi.org

कौन नहीं करता परन्तु धन प्राप्ति के पश्चात् दुख के मिटने पर उनकी भावनाएं उनके क्रिया-कलाप, उनका जीवन सभी परिवर्तित हो जाते हैं। इस तरह के अनेकों अनुभव हमें दिन-प्रतिदिन होते रहे हैं। युद्ध-काल इन वस्तुओं की ओर ध्यानाकर्षण का समय नहीं देता। युद्ध वाष्प निकल जाने के पश्चात् इसकी गहराई में जो वस्तुएं हैं उभर आती हैं। जब स्वतंत्रता संग्राम समाप्त हुआ तो सर्व विदित हुआ कि हम इसके योग्य नहीं हैं। हमारी प्रवृत्ति तो केवल अपने ही लाभ की है। दूसरों को लाभ पहुंचाने में कोई रूचि नहीं। ऐसा प्रतीत होता है हमारे अंदर मानवीय हृदय नहीं है बल्कि चीते, भेड़िये और भयानक पशु का हृदय है। इस पाशुविक हृदय से देश की कैसी काया पलट हो गई। संग्राम काल में हम क्या थे, उस काल में हम असहायों की सहायता एवं सेवा करते थे, सम्पूर्ण घृणा एवं पारस्परिक भेद-भाव की भावना त्याग चुके थे। हिन्दू-मुस्लिम का कोई भेद भाव नहीं था। स्वतन्त्रता संग्राम की इस अग्निज्वाला ने हमारी आपस की शत्रुता और वैमनस्य को पिघला दिया। युद्ध-काल सुधार का काल नहीं था। स्वतंत्रता के उपभोग से पहले और स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हमें कितना अवसर मिला था मगर हमने अपनी दीक्षा हेतु इस काल में कोई सामग्री प्रस्तुत नहीं की। सन् १९४७ से सन् १९७५ ई० तक कितना अवसर प्राप्त हुआ।

सुधार के प्रति नैराश्य आशङ्कापूर्ण है :—

हमारे बीच कितनी संस्थाएं हैं, कितने लेखक और

www.abulhasanalinadwi.org

कितने साहित्यकार हैं जिन्होंने मनुष्यों में वास्तविक नागरिकता की अनुभूति, मानवीय सम्मान, वास्तविक स्वदेश प्रेम पैदा करने का स्नेह एवं मर्यादित प्रयत्न किया है आज इस वर्तमान स्थिति में प्रत्येक व्यक्ति दुःखी एवं निराश है। प्रत्येक समारोह में वाद-विवाद का विषय आज की वर्तमान दुर्दशा है। प्रत्येक व्यक्ति एक स्वर से कह रहा है न भोजन में आनन्द है और न शांति है परन्तु इस वर्तमान स्थिति के सभी उत्तर दायी हैं। इस दूषित जल में हम सभी गले तक डूबे हैं। हम सभी दूषित जल की धारा में अपने लाभ का मोती निकालना चाहते हैं। इस गंदे जल की निन्दा तो प्रत्येक कर रहा है पर वह गोता लगाने में स्वयं प्रयत्नशील है और चाहता है कि अपने लाभ का मोती निकाल लें, यह सब इस निराशा का परिणाम है तथा इस देश के भाग्य में बिगाड़ ही लिखा है और इसके सुधार का कोई अन्य उपाय नहीं। यह निराशा असीमित कष्टप्रद एवं देश व समाज के लिये अत्यन्त घातक है।

नक्कारखाने (दुन्दुभि कक्ष) में तूती की आवाज :—

आज का यह समारोह एवं अल्प प्रयास नक्कार खाने में तूती की आवाज़ से अधिक नहीं पचपन करोड़ भारतीयों का यह नक्कार खाना उसमें सीमित व्यक्तियों की ध्वनि का क्या मूल्य ? इस कष्टप्रद वर्तमान स्थिति का विरोध करने के लिये मार्ग ढूंढने का शायद कोई ईश्वर भक्त हमारे साथ सम्मिलित हो जाये। और इस वर्तमान भयङ्कर स्थिति से अवांछनीयता प्रकट करें।

www.abulhasanalinadwi.org

प्रिय बन्धुओ इस समय सम्पूर्ण राष्ट्र सङ्कट की प्राचीरों से घिरा हुआ है। वाह्य शक्तियों से कोई सङ्कट नहीं है। वह समय व्यतीत हो गया जब एक देश दूसरे देश पर आक्रमण करता था और एक वर्ग दूसरे वर्ग को अधीन रखता था कोई ऐसी कल्पना भी नहीं कर सकता कि आधुनिक युग में एक देश दूसरे देश पर आधिपत्य जमाए। परन्तु वर्तमान स्थिति ऐसी है कि प्रत्येक व्यक्ति व्यथित है और वह किसी मुक्ति प्रदान करने वाले की प्रतीक्षा में है। हमारे देश की जनता इस स्थिति से इतनी व्याकुल हो चूकी है कि न तो स्वतंत्रता के महान् सम्मान का ध्यान करती है और न इस पुनीत साहित्य की चिन्ता, जो स्वतन्त्रता के परिपेक्ष में लिखा गया है, न इस काल के कष्टों का ध्यान करेंगे जो अंग्रेजों के काल में यहां के निवासियों ने सहन किये। वह तो इस स्थिति को परिणत करने के इच्छुक हैं जो स्वतन्त्रता के लाभ में रूकावटें हैं।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् :–

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का मानवीय इतिहास में एक विशिष्ट स्थान है। इसका पुस्तकों में एक स्वर्णिम अध्याय है। परन्तु जिस देश के निवासी उस देश की शासन प्रणाली से निराश हों और वह यह विचार करते हों कि इस देश में हमारे अधिकार नहीं मिल रहे हैं, हमारी आवश्यकताओं की उचित पूर्ति नहीं हो रही है, हम सम्मान एवं शान्ति से जीवन नहीं व्यतीत कर सकते ; शासन व्यवस्था के प्रति इससे अधिक अविश्वास क्या हो सकता है परन्तु यह करोड़ों निर्दोष जनता

www.abulhasanalinadwi.org

यह साधारण मनुष्य (man of Steet) जिसने राजनीति का एक शब्द भी नहीं सीखा वह राजनीतिक दांव-पेंच नहीं जानता है जो कुछ कहता है सच कहता है वह उसके आत्मा की ध्वनि होती है। यह प्रस्तुत वाणी, और घटना वस्तु वारम्वार घोषणा करती है कि यह मेरा विश्वास इस शासन व्यवस्था से रूठ चुका है।

एक दल का विषय नहीं :—

मैं किसी एक दल, किसी एक सम्प्रदाय, किसी एक वर्ग के विषय में नहीं कहता हूं पूरे सामज, शिक्षा प्रणाली, देश के श्रेष्ठ और समस्त उन्नत शील वर्ग को कहता हूं कि इस पर से साधारण जनता का विश्वास उठ चुका है आप किसी हृदय के संकोचन एवं विमोचन का निरीक्षण कर सकते है और इसके लिये शल्य क्रिया की आवश्यकता भी नहीं। आप देखेंगे उसमें विश्वास नहीं रहा सभामञ्च पर भाषण देना लेख लिखना दूसरी वस्तु है। वास्तविक अनुभव यह है कि घर में कुछ और सभाओं में कुछ और व्यक्त किये जाते हैं। कविवर अकबर इलाहावादी के शब्दों में—

नक्शों को तुम न जांचों, लोगों से मिल के देखो।
क्या चीज जी रही है, क्या चीज मर रही है॥

वन्धुओ साधारणतयः लोग किसी विशेष वर्ग या विशेष व्यक्तियों या कभी कभी किसी व्यक्ति विशेष को समाज की कुरीतियों एवं बुराइयों का उत्तरदायी ठहराते हैं और वह समझते हैं-

www.abulhasanalinadwi.org

कि इन तत्वों ने या इस बिगड़े हुए व्यक्ति ने पूरे सामाजिक जीवन को कुमार्ग पर डाल दिया। लेकिन मुझे इस पर विश्वास नहीं और मैं इसका समर्थक भी नहीं। मैं इतिहास के गहन अध्ययन के फलस्वरूप कहता हूं कि एक ही मछली पूरे तालाब को गन्दा कर सकती है परन्तु एक व्यक्ति विशेष से समाज नहीं बिगड़ सकता। वास्तविकता यह है कि भले समाज में बुरे मनुष्य का कोई अस्तित्व नहीं, वह घुट-घुट कर मर जाएगा। जैसे मछली पानी से निकाल देने पर मर जाती है। इसी तरह जो समाज बुराई के प्रति अवरोध उत्पन्न करता है वह उसका स्वागत करने के लिये तैयार नहीं। इसमें से बुराई स्वयं नष्ट हो जाती है।

प्रत्येक युग में भले और बुरे मनुष्य होते रहे हैं लेकिन प्रत्येक बुराइयों का केवल एक व्यक्ति पर उत्तरदायित्व डाल देना और अनेकों बुराइयों का कारण उस पर थोपना एवं दोषी ठहराना उचित नहीं। यदि कुछ मनुष्य अधिक बुरे हो गए थे तो इसका अर्थ यह नहीं कि पूरे जीवन का हैण्डिल इन्हीं के हाथ में था वह जिस तरफ चाहते थे जीवन को मोड़ देते थे। वरन् वास्तविकता तो यह है कि इस युग में सामाजिक बुराइयां स्वयं आ गईं। उस युग में अन्तःकरण दूषित हो गए थे। उसमें कुरीतियों की ओर उन्मुखता उत्पन्न हो गई थी। इसके अन्दर अन्धेर, अत्याचार एवं इच्छाओं की पूर्ति की अत्यधिक लालसा उत्पन्न हो गई थी, मनुष्य स्वयं इन्द्रियों के वशीभूत हो गया था। जिस हृदय का क्षरण प्रारम्भ हो जाए, जो मन पापी हो जाए, आप उसे पापों से किसी भांति रोक नहीं सकते।

www.abulhasanalinadwi.org

यदि आप उसे जकड़ कर भी रखेंगे तब भी इन वस्तुओं से सुरक्षित नहीं रख सकते।

कृत्रिम वर्तमान स्थिति :–

आज समाज की जो स्थिति है वह बिल्कुल कृत्रिम एवं अप्राकृतिक है। इसमें स्थिर रहने की कोई योग्यता नहीं। यह देश वासियों की दुर्बलता है कि इस वर्तमान स्थिति को सहन कर रहे हैं, मैं क्रांति एवं आज्ञोल्लंघन का सिंहनाद नहीं देता। मैं केवल समाज सुधार का नारा दे रहा हूं। मैं केवल मानवीय अधिकारों की पुर्नन्यायार्थना कर रहा हूँ। भारतीय होने के नाते अपील कर रहा हूं, ऐसा विदित होता है कि आंवें का आंवा ही बिगड़ा हुआ है। यदि मेरा उन महान् व्यक्तियों एवं आन्दोलनों से सम्बन्ध न होता जिन्होंने सर्व प्रथम इस देश के स्वतंत्रता संग्राम का स्वप्न दिखाया था और संग्राम में अधिक से अधिक भाग लिया था तो मैं इतने सत्य-वादन से काम न ले सकता लेकिन मेरा हृदय और मेरी आत्मा इस कटुवादन एवं समालोचना के अतिरिक्त शांत है। क्योंकि मेरे पूर्वजों एवं पितामह का ज्ञात- प्रमाण (Record) न केवल पवित्र एवं निर्मल ही रहा है अपितु देदीप्यमान भी रहा है।

ईश्वर-भय एवं स्वदेश प्रेम :— किसी देश या जाति की सुरक्षा एवं स्थिरता के लिये आत्मलाभ, अत्याचार, अविश्वास, विश्वासघात तथा अपयोजन से बचाने के लिये वास्तविक शक्ति तो ईश्वर में विश्वास एवं भय है, जब किसी मनुष्य के हृदय एवं मस्तिष्क पर यह विश्वास एवं भावना

www.abulhasanalinadwi.org

आसीन हो जाए कि एक ऐसी महान् शक्ति भी है जो तिमिर एवं प्रकाश में भी हमारी निर्देशक है और मुझे उसके सम्मुख उसके समस्त प्रश्नों का उत्तर देना है तो वह कोई कलुष कार्य नहीं कर सकता, सुधार का इससे कोई उचित उपाय एंव मार्ग नहीं, यह ऐसी महान् शक्ति है जो चोरों को भी अपना सन्निकट बनाती है। यदि इसके अतिरिक्त कोई और दूसरी शक्ति मानी जाय तो वह "स्वदेश-प्रेम है, यह धारणा हो कि यह हमारा देश है, हमारा नगर है और हम इस देश के वासी हैं। ईश्वर न करे किसी देश में यह दोनों निरूपित उत्साह एवं प्रेरणायें समाप्त हो जायें। संसार की कोई शक्ति इसको नष्ट होने से बचा नहीं सकती। कोई महान से महान् दर्शन शास्त्र, उच्चतम शिक्षा, मनोविज्ञान एवं लाखों विश्व विद्यालय काम नहीं आ सकते। आधुनिक योरोप स्वदेश-प्रेम एवं उत्साह के बल पर ही स्थिर है। इसने दो महान् युद्ध झेलें हैं। योरोप ने दो बार रक्त-सरिता में स्नान किया है। हमारे ऊपर तो केवल रक्त की दो-चार बूदें टपकी हैं। योरोप युद्ध रूपी रक्त-सागर में दो बार डूब कर निकला। महान् युद्धों में बड़े-बड़े नगर धराशाही हुये किन्तु वहां के लोगों के हृदय में वास्तविक स्वदेश-प्रेम था जिससे वे पुनः संसार के भौगोलिक चित्र में अविलम्ब स्थान ग्रहण कर सके। उनके भग्नावशेषों पर उनके महल पुनः खड़े हो सके और उनके नगरों को पुनर्जीवन प्राप्त हो सका। योरोप में हज़ारों खराबियां, धर्म विमुखता, नास्तिक्ता, अनीश्वरवादिता, दुराचार्य, अपराध, भोग-विलास की उन्नति है। किन्तु वास्तविक देश प्रेम, न्यायप्रियता, उत्तरदयित्व की

www.abulhasanalinadwi.org

भावना और प्रत्येक नागरिक के अधिकारों की सुरक्षा एवं उसके जीवन सुरक्षा की भावना ने उनको थाम रखा है।

यदि किसी देश या सम्प्रदाय में न ईश्वर का भय हो, न मातृ-भूमि का प्रेम हो, तो इसकी रचनात्मक योजनायें और भौतिक उन्नति उसे विनाश के कगार से हटा नहीं सकती। देशवासियों को चाहिये कि इस स्थिति की ओर ध्यान दें और मानवीय-आवाहन के नाम से जो अल्प प्रयास हो रहा है उसमें अपना योगदान करें।

मुसलमानों पर द्वि-उत्तरदायित्व :-

अन्त में मैं अपने समस्त मित्रों, इष्टबन्धुओं एवं स्नेहियों से कहूंगा कि उन पर, विशेष रूप से मुस्लिम भाइयों पर, इस समय दोहरा उत्तरदायित्व है। प्रथम यह कि उनका धर्म एवं धार्मिक ग्रन्थ "पवित्र कुरआन" और उनके अन्तिम महर्षि मुहम्मद साहब के "उपदेश" उनको इस आम बिगाड़, अग्नि-ज्वाला और पूंजीवाद के इस प्लावित दूषित जल से बचने की प्रेरणा देता है तथा इसका विरोध करने एवं जनमानस को बचाने का कार्य-भार भी सौंपता है। अन्तिम महर्षि मुहम्मद स० ने स्पष्ट रूप से समझा दिया है कि यदि नाव के किसी सवार को भी ऐसी गति से रोकने का प्रयास न किया गया जिससे यह नौका संकट ग्रस्त होती है, यदि यह नौका डूबी तो इसका कोई भी सवार सुरक्षित नहीं रह सकेगा और वह नाव पापी एवं निर्दोष, सोते एवं जागने वालों सबके साथ डूब जाएगी। उस समय कोई पुण्य एवं बुद्धिमत्ता काम न आएगी। उनके द्वितीय उत्तरदायित्व का कारण यह है कि वह इस देश में

www.abulhasanalinadwi.org

मानवीय सम्मान, न्याय एवं समानता तथा सामाजिक न्याय का आवाहन लेकर आये थे और उन्होंने दयनीय दशा में देश की सहायता की थी। यह सन्देश उनकी धार्मिक शिक्षाओं एवं उपदेशों में पूर्ण रूपेण सुरक्षित है। यदि इन्होंने इस देश और समाज की डगमगाती नैया को मझधार से किनारे न लगाई तो वह आध्यात्म-जगत में उस महान् सर्वशक्तिमान् ईश्वर के सम्मुख दोषी ठहराये जायेंगे। मानवीय इतिहास की मीमांशा में वे कृतघ्नी एवं अपराधी समझें जायेंगे।

www.abulhasanalinadwi.org

प्रतिज्ञा

मैं जिस सर्वशक्तिमान् एवं अन्तर्यामी को अपना स्वामी एवं पालन हार मानता हूं, उसकी सौगन्ध लेकर यह प्रतिज्ञा करता हूं कि—

१. यदि मैं विद्यार्थी हूं तो मेरा उद्देश्य शिक्षोन्नति, सामाजिक भलाई तथा मानवता की सेवा करना और एक अच्छा नागरिक बनना होगा। ताकि भविष्य में इस देश का नेतृत्व संभालने के योग्य बन सकूं। मैं हिंसा एवं आज्ञोल्लङ्घन से बच कर अपनी आयु, यौवन, शिक्षा एवं क्षमता को देश की सेवा करने और सर्वसाधारण के हित में अर्पित करूँगा।

२. यदि मैं सेवा कार्य में हूं तो मेरा सिद्धान्त सत्यता, ईमानदारी तथा सर्वसाधारण की सेवा करना होगा और मैं भ्रष्टाचार, छल-कपट के कार्य में सुस्ती तथा काम चोरी और सगे सम्बन्धियों के प्रति पक्षपात से बचूंगा।

३. यदि मैं व्यापारी हूँ तो अनियमित भण्डारण, चोर-बाजारी, अनुचित लाभ तथा सर्वसाधारण का आर्थिक शोषण करने से बचूंगा।

४. यदि मैं अध्यापक, लेखक, पत्रकार अथवा कवि हूँ तो ऐसे विचारों एवं उद्देश्यों के प्रकाशन में रूचि एवं योगदान करूंगा, जो मनुष्यों के प्रति मित्रता का भाव उत्पन्न करते हैं तथा जो मन एवं वातावरण के अनुचित आकर्षण को रोकने,

www.abulhasanalinadwi.org

घृणा एवं क्रोध से बचने और गन्दे विचारों पर नियन्त्रण प्राप्त करने में सहायक होते हैं।

५. यदि मैं उत्तरदायी पद पर आसीन रहूँगा तो मैं अपनी सीमा के कार्य-वृत्त में न्याय करने और हकदार को उसका उचित अधिकार दिलाने में पूर्ण प्रयास करूँगा।

६. समाज के जिस वर्ग से भी मेरा सम्बन्ध हो मैं इस देश को अपनी जन्म-भूमि समझते हुए इसके उत्थान एवं हित के लिए प्रत्येक सम्भव प्रयास करूँगा तथा इस देश के निवासियों को अपना भाई और अपने को उस कुटुम्ब का एक व्यक्ति समझ कर उनके प्रति प्रेम, सहयोग एवं सहानुभूति पूर्वक व्यवहार करूँगा।

७. इस देश को नैतिक पतन एवं मानवता को दमन से बचाने के लिये और इस संदेश को फैलाने के लिये "अखिल भारतीय पयामे इन्सनियत फोरम" जो कार्य कर रहा है उसके निर्धारित कार्यों की समय-सारिणी में सहयोग करूँगा एवं पूर्ण रूपेण रूचि लूँगा।

www.abulhasanalinadwi.org